कानूनों की खासियत

इस कानून और इसके तहत दी जाने वाली सजा ने एक समाज या राष्ट्र के तौर पर पाकिस्तान को तरक्की की कोई सीढ़ी नहीं दी। अगर कुछ दिया तो यही कि वहां धार्मिक कट्टरपंथी तत्वों का समाज पर शिकंजा और मजबूत कर दिया।

मर्नाज शाह।।

ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड (एआईएमपीएलबी) की कानपुर में हुई 27वीं बैठक में जो प्रस्ताव पारित किए गए, उनमें ईशनिंदा कानून बनाने की मांग भी शामिल है। बोर्ड का कहना है कि देश में पैगंबर मोहम्मद साहब और अन्य पवित्र धार्मिक प्रतीकों का अपमान करने वाली घटनाओं में बढ़ोतरी को देखते हुए ऐसा कानून लाना जरूरी है। संभवतः अपनी तरफ से उदारता का परिचय देते हुए एआईएमपीएलबी ने इस प्रस्तावित कानून में सभी धर्मों को शामिल करने का सुझाव दिया, लेकिन सचाई यही है कि सभी धर्मों को शामिल करने से इस सुझाव की मूल प्रकृति में कोई खास बदलाव नहीं आता, न ही इसमें निहित खतरे कम होते हैं।

सबसे पहले तो यही देखने की बात है कि जिन देशों में ऐसा कानून सख्ती से लागू है, उनकी आज क्या दशा है। सबसे अच्छा उदाहरण पड़ोसी देश पाकिस्तान ही है, जो इस कानून के तहत मौत की सजा का इंतजार कर रहे या आजीवन कैद काट रहे लोगों की संख्या के मामले में पूरी दुनिया में अव्वल है। इस कानून और इसके तहत दी जाने वाली सजा ने एक समाज या राष्ट्र के तौर पर पाकिस्तान को तरक्की की कोई सीढ़ी नहीं दी। अगर कुछ दिया तो यही कि वहां धार्मिक कट्टरपंथी तत्वों का समाज पर शिकंजा और मजबूत कर दिया।

सच है कि ऐसे कानून दुनिया के बहुत से देशों में लागू थे, पर जैसे–जैसे शिक्षा और विकास की रोशनी पहुंची, ऐसे कानून कमजोर होते गए। ज्यादातर देशों ने या तो इस कानून को खत्म कर दिया या इन पर अमल कम कर दिया। दुनिया भर में विचार अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता सुनिश्चित करने वाले कानूनों पर जोर दिखने लगा, न कि इस पर पाबंदियां लगाने वाले कानूनों पर। जहां तक अपने देश की बात है तो हमारा संविधान वैचारिक अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की गारंटी देता है। हम एक धर्मनिरपेक्ष समाज हैं। बेशक संविधान तमाम नागरिकों को अपने–अपने धार्मिक विश्वासों के अनुसार आचरण करने की स्वतंत्रता भी देता है और नागरिकों के धार्मिक विश्वास का सम्मान भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए। लेकिन इसके लिए तमाम कायदे–कानून पहले से मौजूद हैं।

अगर कोई व्यक्ति किसी धर्म के प्रतीकों का अपमान करता है तो उसके खिलाफ इन कानूनों के तहत उपयुक्त कार्रवाई की जा सकती है। इन कानूनों की खासियत यह भी है कि ये धार्मिक भावनाओं को चोट पहुंचाने की मंशा और धर्म से जुड़े किसी पहलू की स्वस्थ, तार्किक आलोचना में फर्क कर सकते हैं। एक लोकतांत्रिक समाज में यह फर्क बने रहना जरूरी है। ईशनिंदा कानून लाने जैसी मांगें समाज की दृष्टि में इस फर्क को धुंधला बनाने और धर्म को संपूर्णता में तर्कपूर्ण बहसों से दूर करने की कही अनकही इच्छा से प्रेरित हैं। इसलिए इनसे सतर्क रहने में भलाई है।

पुत्र–कुपुत्र

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा।

पुत्र, कुपुत्र होता है पर माता कुमाता नहीं होती है। इसलिए आपको देवताओं और दानवों में कोई अंतर नहीं करना चाहिए। हम दोनों ही महर्षि कश्यप की संतान है और जहां तक धर्म की बात आती है तो ऐसा नहीं है कि देवताओं ने बार–बार धर्म का पालन किया।

ऐसे कई उदाहरण है जहां उनका आचरण धर्म संगत नहीं कहा जा सकता, जैसे कि अमृत मंथन के समय हमने बराबर मात्रा में योगदान दिया लेकिन विष्णु ने छल पूर्वक हमें अमृत नहीं दिया और राहु का सिर काट दिया। इतना ही नहीं विष्णु की इच्छा के कारण इंद्र ने ऐरावत हाथी, पारिजात, कामधेनु, उच्चैःश्रवा (सफेद रंग का और सात मुख वाला घोड़ा) ले लिया।" इस प्रकार का अन्याय करने के बाद भी देवता धर्म के प्रवक्ता बन गए।

संपादकीय

दिल्ली में नया प्रयोगं

देश की अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाने और रोजगार के नए अवसर बनाने के लिए आज भारत में आंत्रप्रन्योरशिप माइंडसेट की सबसे ज्यादा जरूरत हैद्य इसके लिए हमारे स्कूलों और विश्वविद्यालयों को महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए अपने शिक्षा मॉडल को बदलना होगा। योजना को शुरू करने के दौरान हमने सोचा भी नहीं था कि बच्चों में कुछ नया करने और सोचने की प्रतिभा इतने आश्चर्यजनक ढंग से सामने आएगीद्य हमारे बच्चे मौजूदा समस्याओं से लेकर आस–पास उपलब्ध आधुनिकतम टेक्नलॉजी को चुनौती देते हुए आगे बढ़ने की योजनाएं बना रहे हैं और प्रतिभा के दम पर इन्वेस्टर्स को आसानी से अपने स्टार्टअप में निवेश करने के लिए मना रहे हैं। यह आश्चर्य की बात नहीं होगी कि बिजनेस ब्लास्टर्स के पहले ही वर्ष के स्टूडेंट्स कुछ इतना बड़ा कर जाएं कि आने वाले 5–10 सालों में ही सफल कंपनियों की सूची में इनकी कंपनियां भी जगह बना लें। दिल्ली सरकार और शिक्षा विभाग का लक्ष्य है कि हमारे बच्चों में आंत्रप्रन्योरशिप माइंडसेट विकसित हो। वे सिर्फ नौकरी ढूंढने वाले नहीं बल्कि नौकरी देने वाले भी बनेंद्य यदि हमने 11वीं–12वीं के बच्चों में यह सोच विकसित कर दी तो मुझे पूरा भरोसा है कि उनका ग्रैजुएशन के बारे में नजरिया बदल जाएगाद्य इस मकसद को पूरा करने में जहां हमारे स्कूल और कॉलेज बड़ी भूमिका निभा सकते हैं, वहीं उद्यमशीलता पर आधारित टेलीविजन शो भी सही माहौल बना सकते हैं। यदि हमने इस संभावना को ठीक से समझ लिया तो इससे देश में आर्थिक तरक्की का माहौल बदल सकता है।

इन सब के बावजूद मात्र 2–3 दशक के भीतर ये देश न केवल दोबारा विकसित हुए बल्कि विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाले देशों की श्रेणी में भी शामिल हो गए। जापान, जर्मनी इसके उदाहरण हैं।

नए माइंडसेट की जरूरत

मनीष सिसोदिया।।

भारतीय टेलिविजन स्क्रीन पर इस महीने बिजनेस की दुनिया का पहला रियलिटी शो 'शार्क टैंक इंडिया' शुरू होने जा रहा है। मैं उत्सुकता से देखना चाहता हूं कि क्या यह शो बिजनेस और आंत्रप्रन्योरशिप के प्रति देश को एक नई सोच दे सकता है?

आज आंत्रप्रन्योर माइंडसेट की कमी ही भारत की वह सबसे बड़ी कमजोरी है, जिसकी वजह से आजादी के 75वें साल में प्रवेश करने के बाद भी भारत विकसित देश नहीं बन पाया है। विश्व के कई देश भारत की आजादी के समय या उसके ठीक कुछ समय पहले वर्ल्ड वॉर के दौरान युद्ध की विभीषिका से बर्बाद हो चुके थे। उनके शहर तबाह हो चुके थे और संसाधन खत्म। इन सब के बावजूद मात्र 2–3 दशक के भीतर ये देश न केवल दोबारा विकसित हुए बल्कि विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाले देशों की श्रेणी में भी शामिल हो गए। जापान, जर्मनी इसके उदाहरण हैं। वहीं, भारत आज भी एक विकासशील देश ही है, जबकि यहां न तो संसाधनों की कोई कमी है और न ही प्रतिभाओं की। आज आईआईटी और आईआईएम से निकली प्रतिभाएं दुनिया की सबसे बड़ी, आधुनिकतम और प्रगतिशील कंपनियों को चला रही हैं। चाहे वह गूगल के सीईओ सुंदर पिचाई हों या फिर

माइक्रोसॉफ्ट के सत्या नडेला।

हाल ही में जब पराग अग्रवाल ट्विटर के सीईओ बने तो सोशल मीडिया पर एक पोस्ट बहुत वायरल हुआ– 'पढ़ेगा इंडिया, तभी तो बढ़ेगा अमेरिका'। बेशक यह व्यंग्यात्मक था, लेकिन काफी हद तक यह बात भी सच है कि भारत की प्रतिभाएं दुनिया की सबसे आधुनिक और प्रगतिशील कंपनियों को चला तो रही हैं, लेकिन ऐसी कंपनियां बना नहीं रहीं। इसकी सबसे बड़ी वजह भारत के वर्तमान वातावरण में आंत्रप्रन्योरशिप माइंडसेट की कमी होना है।

पिछले दशकों के कुछ उदाहरण को देखें तो एक महत्वपूर्ण टेलिविजन शो से यह अपेक्षा रखना कोई बड़ी बात नहीं है। 'कौन बनेगा करोड़पति' ने जहां देश के आम आदमी के मन में सामान्य ज्ञान के प्रश्नों के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न की है, वहीं 'इंडियन आइडल' ने आम घरों के बच्चों, दूर–दराज गांवों के युवाओं में यह आत्मविश्वास पैदा किया है कि अपनी प्रतिभा के दम पर वे भी राइजिंग स्टार बन सकते हैं। तो यह कहना गलत नहीं होगा कि यदि यह शो भारत में अपने उसी तेवर के साथ आया, जिस तेवर के साथ वह अमेरिका और दुनिया के अन्य कई देशों में अपनी छाप छोड़ चुका है तो आंत्रप्रन्योरशिप माइंडसेट के साथ कुछ नया करना, नए तरीके से करना और नया करने की हिम्मत रखना भारतीय जनमानस के बीच चर्चा का विषय बन सकता है। और अगर ऐसा हुआ तो यह भारत की आर्थिक प्रगति की राह में एक अहम मोड़ साबित हो सकता है।

मैं शिक्षामंत्री के रूप में कई बार विश्वविद्यालयों के दीक्षांत समारोहों में जाता हूं। वहां मुझे यह देखकर आश्चर्य होता है कि हर विश्वविद्यालय में बड़े शान से बताया जाता है कि हमारे कितने स्टूडेंट्स ने बड़ी–बड़ी कंपनियों में मोटे पैकेज के साथ नौकरी प्राप्त कर ली है। लेकिन कोई यह नहीं बताता कि हमारे किस स्टूडेंट ने अपने आइडिया के साथ किसी नए काम को करते हुए एक शानदार स्टार्टअप शुरू किया है और लोगों को रोजगार दे रहा है। आज हमारे देश के शिक्षण संस्थान कुल मिलाकर एक ऐसी फैक्ट्री बन चुके हैं, जहां से केवल नौकरी ढूंढने वालों की फौज निकल रही है।

अष्टयोग-5021

3		1	4	7		
6	35	5	30		25	
		2			1	
1	33		31	4	29	2
	6		1	5		
4	33	3	31	6	37	6
		7			6	3

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है. खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं. गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों ओर के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी. सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

अष्टयोग 5020 का हल

5	7	2	4	3	6	1
3	31	1	23	6	32	2
6	3	4	1	2	7	5
1	30	6	33	4	36	4
2	1	7	4	5	6	3
7	35	3	35	7	37	6
4	6	5	3	1	2	7

Jagrutidaar.com, Bangalore

अपना ब्लॉग

बिजनेस आइडियाज के साथ स्टार्टअप

मोहन। दिल्ली सरकार के स्कूलों में 11वीं–12वीं कक्षा में लगभग 3 लाख बच्चे पढ़ते हैं और इनमें से लगभग सभी ने टीम बनाकर 51,000 से अधिक बिजनेस आइडियाज के साथ अपने स्टार्टअप शुरू किए हैं। हो सकता है कि इनमें से कुछ केवल क्लास प्रॉजेक्ट तक ही सीमित रह जाएंगे, कुछ 4–6 महीने चलें और अंत में घाटे के साथ बंद हो जाएं। लेकिन खुशी की बात यह है कि अब तक ज्यादातर बच्चों ने प्रॉफिट कमाया है और अगर वे फेल भी होते हैं तो अपनी नाकामी से सीखेंगे। उन स्कूलों और कॉलेजों में भी जहां देश की सबसे बेहतरीन प्रतिभाएं तैयार हो रही हैं, वहां भी 99.9 प्रतिशत बच्चों के सपने एक अच्छी नौकरी पाने तक ही सीमित हैं। यहां मैं थोड़ा उल्लेख दिल्ली के सरकारी स्कूलों का करूंगा, जहां इस दिशा में हमने एक प्रयोग किया हैद्य हम11वीं–12वीं के बच्चों को सीड मनी देकर अपना स्टार्टअप आइडिया तैयार करते हुए कुछ नया करने की चुनौती दे रहे हैं। दिल्ली सरकार ने इसके लिए बजट से 60 करोड़ रुपये आवंटित किए हैं।